Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

9. महिलाओं की सामाजिक एवं वैचारिक सशक्तीकरण और वैकल्पिक मीडिया

डॉ. रामशंकर
सहायक प्राध्यापक
आईआईटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा
डॉ. मनीषा सक्सेना
एसोशिएट प्रोफेसर एवं डीन, शिक्षा एवं कौशल विकास अध्ययनशाला
ब्राउस, म.प्र.

शोध सार

वैश्वीकरण के दौर में इन लोगों का एक बड़ा वर्ग असंदर्भित हो गया। इन असंदर्भित वर्ग उन्नयन के रूप में वैकल्पिक मीडिया की दृष्टि का अध्ययन नितांत अवश्ययक हो जाता है। औद्योगिकीकरण में बढ़ोत्तरी, शहरीकरण और ज्ञान समाज के उभार ने हाशिए पर लोगों के जाने की पहले की प्रवृत्ति को किस तरह प्रभावित किया है और समाज में नई सामाजिक पहचान को किस प्रकार जोड़ा है? बदलती दुनिया में वंचित लोगों के सशक्तीकरण और सामाजिक विकास की वैकल्पिक प्रक्रियाओं को सरल बनाने में वैकल्पिक मीडिया किस तरह अपना योगदान देती है। इस शोध पत्र में महिलाओं के सामाजिक एवं वैचारिक सशक्तीकरण में वैकल्पिक मीडिया के कार्यान्वयन का अध्ययन किया गया है।

प्रमुख शब्द- वैकल्पिक मीडिया, मुख्यधारा की मीडिया, सामाजिक परिवर्तन, राजनैतिक परिवर्तन, महिलाएं, लिंगभेद व जातिगत, सशक्तीकरण

प्रस्तावना

मुख्यधारा की मीडिया में समकालीन विश्व आर्थिक व्यवस्था के पुनर्गठन द्वारा व्यापक रूप से चित्रित होता है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, जन मीडिया और सामाजिक विकास के संप्रेषण में स्पष्ट पुनर्निरूपण के माध्यम से स्थानीय और वैश्विक समुदायों के बीच निरंतर अंतरक्रियाशीलता बढ़ रही है। इन उभरती प्रक्रियाओं में समाज का एक बड़ा वर्ग विशेषकर जातीय अल्पसंख्यक, प्रवासी और झुग्गी में रहने वाले, किसान एवं कामगार, महिलाएं, जनजाति और मूल निवासी, कमजोर एवं पिछड़े वर्ग, सामाजिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से कमजोर वर्ग, वृद्ध एवं समाज के अन्य समूह सामाजिक, आर्थिक और राजनीति रूप से हाशिए पर हैं। हाशिए के पूरे समाज को तो मुख्यधारा की मीडिया में वस्तुपरक दिखाया जाता ही है लेकिन महिलाओं को भी मुख्यधारा की मीडिया में एक सौंदर्य बोध व कामुक रूप में दिखाया जाना बड़ी ही तेजी से बढ़ रहा है।

महिलाएं प्रारंभ से ही मेधा संपन्न रही हैं, लेकिन उनमें जागरूकता का अभाव रहा है। इस जागरूकता अभाव के पीछे भी आज तक अभी पूरी तरह से यह कह पाना संभव नहीं हो पाया कि उनके इस कारण के पीछे का इतिहास क्या रहा है। जागरूकता एवं आत्मविश्वास की कमी भी उनकी उन्नति के मार्ग का रोड़ा रही है। जागरूकता व आत्मविश्वास के अभाव

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

के पीछे सामाजिक, राजनैतिक व पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकता आदि विभिन्न पहलू भी हो सकते हैं। वैसे तो संचार माध्यम समाज के विभिन्न वैकासिक रूपों में बहुत सहायक हैं। परंतु महिला सशक्तीकरण के संदर्भ में बात करते समय संचार के वैकल्पिक माध्यमों अर्थात वैकल्पिक मीडिया की सशक्त भूमिका को सर्वोपरि देखा जाता है। आज समूचे विश्व में स्त्रियों का वर्चस्व बढ़ा है। शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, कला, मनोरंजन-हर क्षेत्र में स्त्रियां अपनी प्रतिभा उजागर कर रही हैं। उनकी पारिवारिक, सामाजिक और वैचारिक स्थिति में परिवर्तन स्पष्ट दिखाई दे रहा है। महिला के प्रति हिंसा, यौन उत्पीड़न, दहेज प्रताड़ना जैसी घटनाएं पहले से घटती आ रही हैं। परंतु वैकल्पिक मीडिया ने उनमें वह चेतना जगायी है जिसके कारण अब वे अत्याचार के विरुद्ध मुखर हो रही हैं।

महिलाएं अपने अस्तित्व की लड़ाई लंबे समय से लड़ती आ रही हैं, लेकिन इसने अभियान का रूप नहीं लिया था। महिलाओं के पक्ष में जमीन तैयार करने में सामुदायिक रेडियो, लघु पत्र-पत्रिकाओं की सबसे अधिक भूमिका रही है क्योंकि ये सभी माध्यम आम आदमी तक पहुंचने के सर्वसुलभ व सस्ते माध्यम हैं। 73 वें और 74 वें संविधान संशोधन के परिणामस्वरूप देश की ग्रामीण एवं नगरीय स्वशासी संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था ने उन्हें अधिकार-संपन्न तो बनाया किंतु जब हरियाणा, हिमाचल प्रदेश,उत्तराखंड, बिहार और मध्यप्रदेश के कुछ आदिवासी क्षेत्रों में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों ने सामाजिक बुराइयों एवं अन्याय के विरूद्ध आवाज बुलंद कर उन पर विजय पाई तो वैकल्पिक मीडिया ने ही समाज में यह आस जगा दी कि सभी विसंगतियों के खिलाफ स्त्रियों की एकजुटता सचमुच क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है।

वैकल्पिक मीडिया से आशय ऐसी मीडिया (समाचार पत्र-पत्रिका, रेडियो, टीवी सिनेमा व इण्टरनेट आदि) से जो मुख्यधारा की मीडिया के संदर्भ में वैकल्पिक जानकारी प्रदान करती है। वैकल्पिक मीडिया को मुख्यधारा मीडिया से हटकर देखा जाता है। मुख्यधारा के मीडिया वाणिज्यिक, सार्वजनिक रूप से समर्थित या सरकार के स्वामित्व वाली हैं। वैकल्पिक मीडिया के अंतर्गत उन खबरों को प्रसारित किया जाता है,जिन्हें मुख्यधारा मीडिया के मीडिया में स्थान नहीं दिया जाता और वे जन सरकारों से पूर्णतः जुड़ी होती है।

सामाजिक एवं वैचारिक सशक्तीकरण और वैकल्पिक मीडिया की अंतरक्रियाएं

आज अभिव्यक्ति मीडिया के वैविध्य आयामों में परिवर्तित हो गयी है। समाचार पत्र-पत्रिकाओं रेडियो, टेलीविजन आधारित पत्रकारिता को ओल्ड मीडिया तथा इंटरनेट व वेब आधारित मीडिया को न्यू मीडिया के नाम से जानते हैं। 'मीडिया' शब्द संचार के साधनों के लिए प्रयोग किया जाता है। मीडिया और समाज का बहुत ही गहरा संबंध होता है। मीडिया समाज की प्रत्येक गतिविधियों को अपनी आँखों से देखती है तथा बुद्धि एवं विवेक के अनुसार उसे परिमार्जित करके समाज को सूचित करती है। वैकल्पिक मीडिया को व्यापक रूप में फैलाने में मुख्यधारा की मीडिया की अहम भूमिका रही है। जब मुख्यधारा की मीडिया में जन सामान्य की बात को भुलाया जाने लगा और मसालेदार,

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

औचित्यविहीन ख़बरें परोसी जाने लगी और साथ ही साथ जनता की अभिव्यक्ति को जन माध्यम में रोका जाने लगा, अखबारी खबरों पर संदेह किया जाने लगा, तब शनैः शनैः वैकल्पिक मीडिया का उत्थान इस सूचना युग में हुआ।

दुनिया भर में बीसवीं सदी के सातवें दशक के आसपास से वैकल्पिक मीडिया की शुरुआत माना जा सकता है। वैकल्पिक मीडिया प्रारम्भिक दौर में एक समाचार पत्र एवं पर्चे के द्वारा समस्या व विचार को केंद्र में रखकर इसके बीज को स्फुटित किया गया। वर्तमान संदर्भ में वैकल्पिक मीडिया से आशय ऐसी मीडिया (समाचार पत्र- पत्रिका, रेडियो, टीवी, सिनेमा व इंटरनेट आदि) से है, जो मुख्यधारा की मीडिया के प्रतिपक्ष में वैकल्पिक जानकारी प्रदान करती है। वैकल्पिक मीडिया को मुख्यधारा मीडिया से हटकर देखा जाता है। मुख्यधारा की मीडिया वाणिज्यिक, सार्वजनिक रूप से समर्थित या सरकार के स्वामित्व वाली हैं। वैकल्पिक मीडिया के अंतर्गत उन खबरों को प्रसारित किया जाता है, जिन्हें मुख्यधारा की मीडिया में स्थान नहीं दिया जाता और वे जन सरोकारों से पूर्णतः जुड़ी होती हैं। एटन क्रिस (Atton Chris) का कहना है कि "वैकल्पिक मीडिया विचारधारा, प्रभुत्व और वर्चस्व को लेकर ग्रामसी (Gramsci) द्वारा व्यक्त धारणा से अलग है।" एटन क्रिस के कथन से स्पष्ट है कि वैकल्पिक मीडिया प्रभुत्त्वहीन होती है तथा इसका जनमानस से सीधा और सरलतम संबंध होता है।

मिशेल अल्बर्ट (2004) ने अपने मेनिफेस्टो 'What makes alternative media alternative?'में वैकल्पिक मीडिया को परिभाषित करते हुये लिखा है एक वैकल्पिक मीडिया अधिकतम संस्था मुनाफा नहीं, मुख्य रूप से दर्शकों को राजस्व के लिए विज्ञापनदाताओं को बेचा नहीं करता है, विकृत समाज के पदानुक्रमित सामाजिक रिश्तों को परिभाषित करने के लिए संरचित है और संरचनात्मक गहराई से एवं अन्य प्रमुख सामाजिक संस्था, विशेषकर निगमों से यह स्वतंत्र रूप से अलग हो सकती है। सामाजिक संस्थाओं के कई खंड, राजनीति से प्रेरित समुदायों को बढ़ावा देने के लिए लोकतंत्र के विभिन्न संस्करणों में सम्मिलित हैं।

वैकल्पिक मीडिया की अवधारणात्मक स्पष्टता देते हुए लेखक 'अंडर स्टैंडिंग अल्टरनेटिव मीडिया' पुस्तक में लिखते हैं कि "वैकल्पिक मीडिया के एक ही क्षेत्र के अंदर बहुत विविधतायें हैं।" (शैली, योगदान व संदर्भ के दृष्टिकोण से) "फ्रांस में सर्वप्रथम मई 1968 में छात्र और श्रमिकों के विद्रोह के बाद वाम विचारधारा से युक्त 'वैकल्पिक' अख़बार दिखाई पड़ा। इसका प्रथम प्रकाशन 18 अप्रैल 1973 ई. को आया, जिसमें इसके प्रकाश में आने का उल्लेख था।"

सामान्य मीडिया यानि मुख्यधारा मीडिया को भी हवा में संचालित नहीं किया जा सकता। उसके लिए भी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक ढांचा व राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे होते हैं, लेकिन वैकल्पिक मीडिया भी स्थानीय, सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना की ही बात करती है। अर्थात ये एक पूर्ण उद्देश्य को लेकर चलती है, जिसमें स्थानीयता का बोध होता है। ये खासकर अपनी ब्रांडिंग के लिए कार्य नहीं करती है। ये पूर्णतः समाज पर आश्रित होती है। इसका मॉडल सहभागी मॉडल होता है।

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

संपादक पंकज बिष्ट के संपादन में निकल निकलने वाली समयांतर पत्रिका उदार प्रगतिशील विचारों का मंच उपलब्ध कराती है। यह वैकल्पिक पत्रकारिता के प्रतिमान को लगभग स्थापित करती है। इसका आधार वाक्य 'असहमति का साहस और सहमति का विवेक" रखा गया। यानी जो बातें असुविधाजनक हैं, वे तो कहनी ही हैं, पर साथ ही वे बातें भी नहीं छिपानी हैं, जो स्वयं हमारे लिए भी असुविधाजनक हो सकती हैं। उत्तर प्रदेश के बुन्देलखंड से ग्रामीण महिलाओं द्वारा निकलने वाला समाचारपत्र 'खबर लहरिया' पाक्षिक समाचार पत्र है, जो वहां की समस्याओं को प्रकाशित करता है। यह अखबार वैकल्पिक पत्रकारिता के प्रतिमान प्रतिस्थापित करता है। अप्रैल 2004 से जौनपुर से निकलने वाला अखबार 'गुनागर' वैकल्पिक सरीखी पत्रकारिता को उद्धृत करता है। उड़िया न्यूजलेटर 'मित्र' के दिसम्बर 2004 अंक में गांव के प्राथमिक विद्यालयों में होने वाली जाति संबंधी परेशानियों पर लिखा गया, जिसकी एक प्रति प्रखंड विकास पदाधिकारी के पास भेजी गई। अधिकारियों ने इससे शिकायत के तौर पर दर्ज कर दोषी स्कूल शिक्षक के विरूद्ध कार्रवाई की। इनके अलावा अन्य कई समाचार पत्र जैसे वाराणसी से 'पुरवई', प्रतापगढ़ से 'भिंसर', सीतापुर से 'देहरिया', मथुरा से 'भैयली' और चित्रकूट से 'महिला डाकिया' (इस श्रृंखला का पहला न्यूजलेटर) ने भी समय के साथ अपनी पहचान बनाई है।

महिलाओं के शिक्षा और सशक्तीकरण के लिए काम करने वाली उत्तर प्रदेश की एक गैर सरकारी संस्था 'महिला सामख्या' इन ग्रामीण समाचार पत्र (न्यूजलेटर) की मदद करती है। चित्रकूट से निकलने वाले 'खबर लहरिया' को महिलाओं के लिए काम करने वाली दिल्ली स्थित एक गैर सरकारी संस्थान 'निरन्तर' का सहयोग प्राप्त है। इन न्यूजलेटर में से कुछ महीने में एक, कुछ तीन महीने में एक और कुछ साल में दो बार निकलते हैं।

इन अखबारों एवं न्यूजलेटर्स में चापाकल, खड़ंजा, सड़क जैसी मूलभूत समस्याओं से लेकर दहेज, नशाखोरी और महिलाओं से हिंसा जैसे मुद्दों पर खबरें प्रकाशित होती हैं। इसके अलावा हत्या और अन्य अपराध से जुड़ी खबरें भी होती हैं। घर और बगीचा संभालने से जुड़ी जानकारी, हालिया शोध की विस्तृत जानकारी आदि इसके आकर्षण हैं। इन सभी वैकल्पिक समाचार पत्र-पत्रिकाओं ने समाज में एक नई सोच व समझ विकसित की है एवं पुरानी रूढ़िवादी विचारधारा को परिवर्तित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वैकल्पिक मीडिया के माध्यम से आज ग्रामीण जनपक्ष की आवाज बुलंद हो रही है।

उद्देश्य (Pupose)- प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के बांदा जिले की महिलाओं में बढ़ रही सामाजिक व वैचारिक सशक्तीकरण में वैकल्पिक मीडिया के हस्तक्षेप पर केन्द्रित है। समाज में तमाम विरोध व कठिनाइयों के बावजूद अपने अधिकारों के प्रति महिलाओं का खुलकर सामने आने के पीछे के सामाजिक, मनौवैज्ञानिक व राजनैतिक कारणों का अध्ययन किया गया है। महिलाओं में जागरूकता स्तर को बढ़ाने व उनसे संबंधित खबरों के माध्यम से उनमें सामाजिक हस्तक्षेपी प्रवृत्ति का अध्ययन करने व विभिन्न लिंगगत समानता के विषय केंद्रित खबरों को आधार बनाकर सर्वेक्षण अध्ययन है।

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

प्ररचना/प्रविधि/उपागम- शिक्षा के बढ़ते ग्राफ के बावजूद लिंगगत भेदभाव मौजूद हैं। फिर भी महिलाओं में सामाजिक एव वैचारिक सशक्तीकरण को चिंहित किया जा रहा है। वैकल्पिक मीडिया की स्थिति का अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण अध्ययन किया गया है। इसमें घटित घटनाओं का वैकल्पिक मीडिया कवरेज, महिलाओं से मिलकर व विषय विशेषज्ञों से साक्षात्कार एवं अनुसूची के जरिये अध्ययन किया गया है।

न्यादर्श का चयन –

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए उत्तर प्रदेश में चित्रकूट मंडल के बांदा जिले का महिलाओं की सामाजिक एवं वैचारिक सशक्तिकरण में वैकल्पिक मीडिया के प्रभाव को जानने के लिए वैकल्पिक मीडिया से जुड़ी एवं वैकल्पिक मीडिया का प्रयोग करने वाली महिलाओं को चयनित किया गया है। इनमें वैकल्पिक मीडिया का उपयोग करने वाले एवं जानकार भी 10 प्रतिशत शामिल किए गए हैं। शोध में उद्देश्यपरक न्यादर्श विधि द्वारा क्षेत्र का चयन किया गया।

शोध का महत्त्व -

- वैकल्पिक मीडिया और भारतीय व्यवस्था परिवर्तन के अंतर्संबंधों का सूक्ष्म विश्लेषण संभव हो पायेगा।
- वैकल्पिक मीडिया की पारदर्शी भूमिका संभव हो पायेगी।
- वैकल्पिक मीडिया के जनमानस तक पहुँच व उसके प्रभाव का अध्ययन हो पायेगा।

अध्ययन प्रविधि –

प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण व अवलोकन विधि का चयन किया गया है।

प्राथमिक स्रोत : प्रश्नावली, साक्षात्कार

द्वितीयक स्रोत- संबंधित साहित्य का अवलोकन,पत्र-पत्रिकाओं के आलेखों, चर्चित ख्यातिलब्ध विद्वानों एवं साहित्यकारों के द्वारा प्रस्तुत शोध के आलोक में प्रस्तुत विचार इत्यादि।

अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में साक्षात्कार और प्रश्नावली तकनीक का प्रयोग किया गया है।

प्रदत संकलन-

शोध के लिये चयनित समग्र क्षेत्र में 50 प्रश्नावली का वितरण किया गया। शोध में विषय से संबंधित विभिन्न प्रकार के दस प्रश्न थे जो उद्देश्य को ध्यान में रखकर निर्मित किए गए थे। प्रश्नावली में वैकल्पिक मीडिया की विवेचना, वर्तमान में वैकल्पिक मीडिया के स्वरूप, वैकल्पिक मीडिया का जनमानस पर प्रभाव व सामाजिक व्यवस्था में वैकल्पिक मीडिया आदि से संबंधित प्रश्न सम्मिलित किए गए थे। तथ्य के संकलन के लिए वैकल्पिक मीडिया के जानकार एवं उपयोगकर्ताओं से साक्षात्कार भी लिया गया।

प्रदत्त विश्लेषण व विवेचना-

The Asian Thinker

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

प्रश्नावली व साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों एवं तथ्यों से जो विश्लेषण उभर कर आए हैं, उनका वर्णन निम्नलिखित है – अध्ययन में सहभागी महिलाओं का सामान्य परिचय –

- प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाता वैकल्पिक मीडिया से जुड़ी/जानकार महिलाएं व पुरुष तथा प्रभाव जानने के लिए वैकल्पिक मीडिया का प्रयोग करने वाली महिलाएं है।
- अध्ययन में सम्मिलित 90 प्रतिशत उत्तरदाता महिला तथा 10 प्रतिशत पुरुष हैं।

अध्ययन में सम्मिलित प्रश्न, आकड़ों का विश्लेषण व प्रस्तुतीकरण

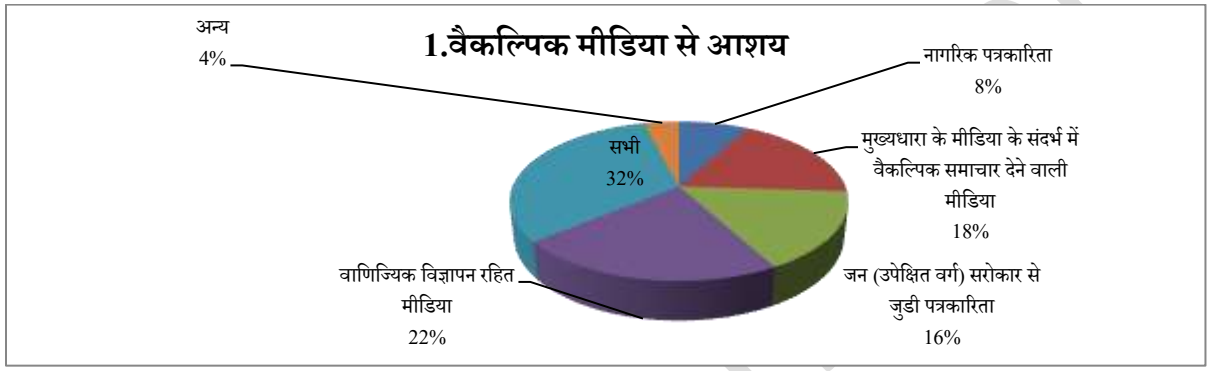

उपर्युक्त चार्ट में उत्तरदाताओं के मतों में सभी (नागरिक पत्रकारिता, मुख्यधारा की मीडिया के संदर्भ में वैकल्पिक समाचार देने वाली मीडिया, जन उपेक्षित एवं विज्ञापन रहित मीडिया) को 32 प्रतिशत मत प्राप्त हुए है। कुछ उत्तरदाता अन्य विकल्प को भी व्यक्तिगत तौर वैकल्पिक मीडिया मानता है, अतः आंकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि वैकल्पिक मीडिया के बारे में लोग भले ही नाम से ज्यादा स्पष्ट न हो लेकिन उसकी प्रकृति विशेष की जानकारी से परिचित हैं।

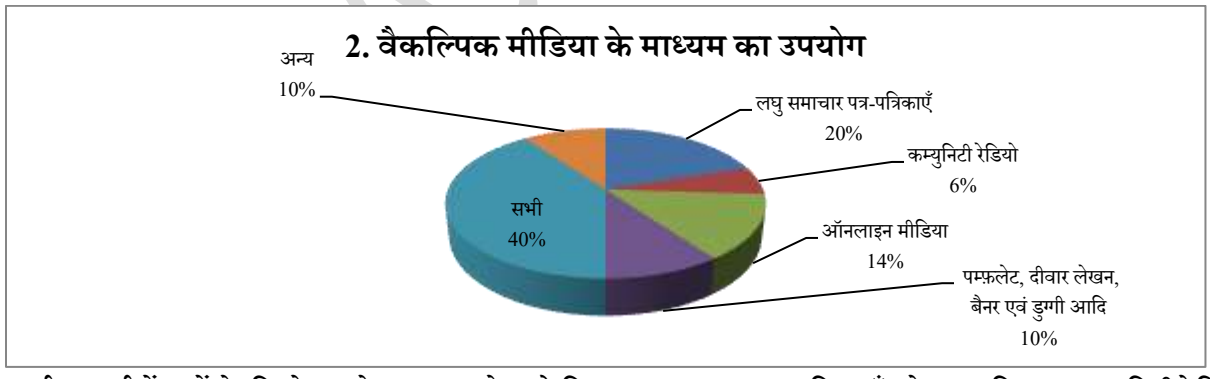

उपर्युक्त चार्ट में मतों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि लघु समाचार पत्र-पत्रिकाएँ को 20 प्रतिशत, कम्यूनिटी रेडियो 6 प्रतिशत,ऑनलाइन मीडिया 14 प्रतिशत, पम्फलेट,बैनर,दीवार लेखन,डुग्गी आदि को 10 प्रतिशत उत्तरदाता प्रयोग करते हैं तथा सभी माध्यमों को 40 प्रतिशत उत्तरदाता प्रयोग करते हैं। अतः आंकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

है कि वैकल्पिक मीडिया के एक से अधिक साधन या लगभग सभी माध्यमों का प्रयोग अभी जन मानस की पहुँच से दूर हैं।

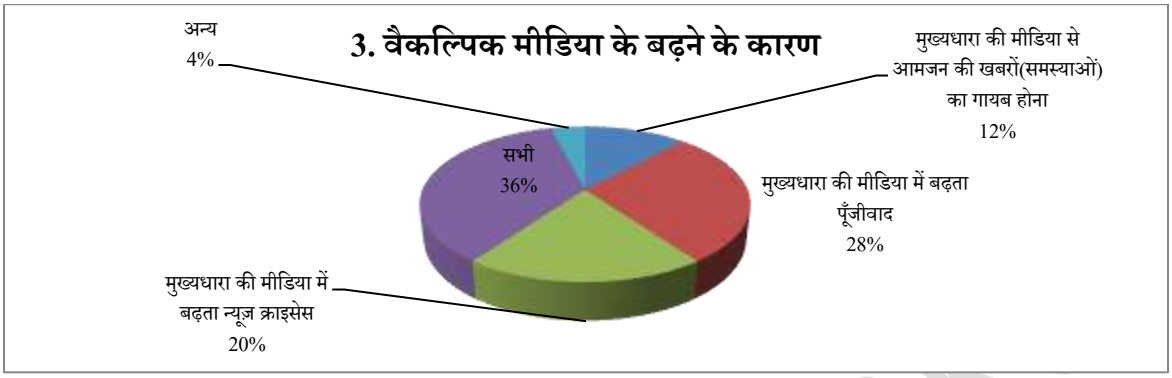

उपर्युक्त चार्ट में प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह कहा जा सकता है कि वैकल्पिक मीडिया के बढ़ने के कारण, मुख्यधारा की मीडिया से आमजन की खबरों (समस्याओं) का गायब होना, मुख्यधारा की मीडिया में बढ़ता पूँजीवाद, मुख्यधारा की मीडिया में बढ़ता न्यूज़ क्राइसिस आदि सभी पहलू जिम्मेदार हैं।

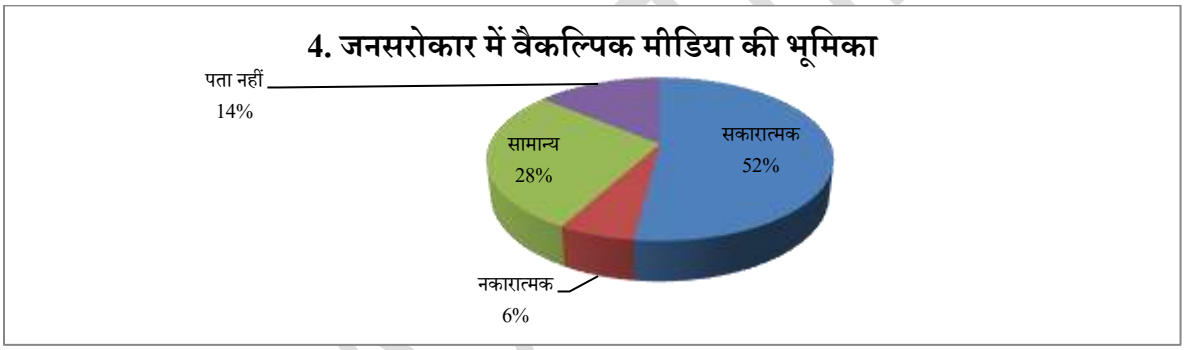

उपर्युक्त चार्ट में प्राप्त मतों में जनसरोकार में वैकल्पिक मीडिया की सकारात्मक भूमिका को 52 प्रतिशत, सामान्य को 28 प्रतिशत तथा 6 प्रतिशत नकारात्मक व पता नहीं को 14 प्रतिशत मत प्राप्त हुये। अर्थात यह कहा जा सकता है कि वैकल्पिक मीडिया की जनसरोकार में सकारात्मक भूमिका है। किन्तु 28 प्रतिशत के उत्तरदाता सामान्य स्थिति की वैकल्पिक मीडिया की उदासीन भूमिका को प्रतिबिंबित करते हैं।

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

5. वैकल्पिक मीडिया के द्वारा जागरूकता और पुराने रूढ़िवादी विचारों का खंडन

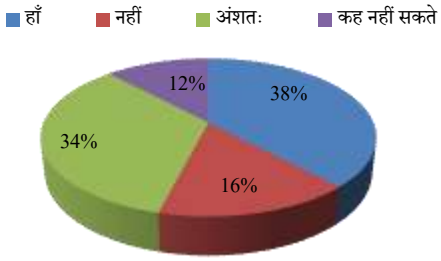

उपर्युक्त चार्ट में प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह कहा जा सकता है कि वैकल्पिक मीडिया के द्वारा अधिकांश उत्तरदाता जागरूक होकर लोगों ने पुरानी रूढ़िवादी विचारों का खंडन कर रहे हैं। लेकिन 34 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतों से इसके अंशतः प्रभाव को भुलाया नहीं जा सकता है। अर्थात वैकल्पिक मीडिया में अभी अस्पष्टता की झलक मिलती है।

6. वैकल्पिक मीडिया की सशक्त उपस्थिति और जनमानस में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता स्तर

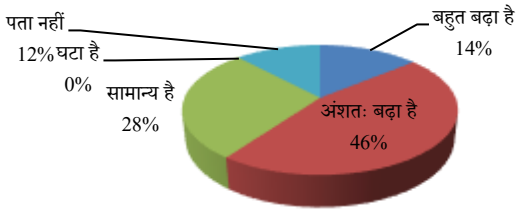

चार्ट के आंकड़ों के विश्लेषण से कहा जा सकता है कि वैकल्पिक मीडिया की सशक्त उपस्थिति से जनमानस में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता स्तर अभी अंश मात्र ही बढ़ा है, लेकिन लोग लगातार वैकल्पिक मीडिया के विभिन्न माध्यमों द्वारा निरंतर गति से जागरूकता की ओर अग्रसर हैं।

7. समाज में वैकल्पिक मीडिया के हस्तक्षेप से पंचायतों में महिलाओं की सक्रियता

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

चार्ट के आंकड़ों के विश्लेषण से कहा जा सकता है कि समाज में वैकल्पिक मीडिया के हस्तक्षेप से पंचायतों में महिलाओं की सक्रियता वर्तमान में बहुत तेजी से बढ़ा है। और महिलाएं लगातार वैकल्पिक मीडिया के विभिन्न माध्यमों द्वारा निरंतर गति से जागरूकता की ओर अग्रसर हैं। लेकिन लेकिन शिक्षित वर्ग के निदर्शन के बावजूद 10 प्रतिशत लोगों का इसकी उपादेयता के बारे में न स्पष्ट होना इसके प्रति उदासीनता को परिलक्षित करता है।

8. सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन जैसे जातिभेद, छुआछूत, सांप्रदायिकता लिंगभेद को मिटाने में वैकल्पिक मीडिया की भूमिका

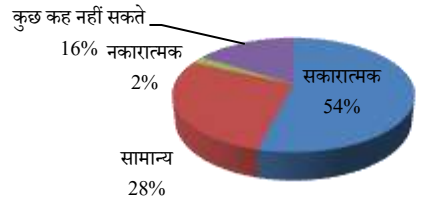

उपर्युक्त चार्ट के आंकड़ों से यह स्पष्ट हो रहा है कि सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन जैसे जातिभेद, छुआछूत, साम्प्रदायिकता, लिंगभेद के भेद को मिटाने में वैकल्पिक मीडिया की सकारात्मक भूमिका है।

9. वैकल्पिक मीडिया ने मुख्यधारा के मीडिया के समानांतर अपनी सत्ता कायम कर ली

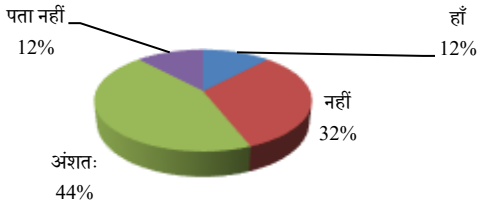

उपर्युक्त चार्ट के आंकड़ों के विश्लेषण में वैकल्पिक मीडिया और मुख्यधारा की मीडिया के समानांतर सत्ता की स्थिति के बारे में 12 प्रतिशत हाँ मत, अंशतः 44 प्रतिशत तथा पता नहीं व नहीं में 44 प्रतिशत मत प्राप्त हुये। निष्कर्षतः अभी मुख्यधारा के समानांतर वैकल्पिक मीडिया की सत्ता नहीं है किंतु लगातार समानांतर होने को प्रयासरत है। ब्लॉगर अविनाश वाचस्पति 'मुन्नाभाई' का कहना है कि "यह (वैकल्पिक मीडिया) एक दिन मुख्यधारा कि मीडिया के समानांतर अपनी सत्ता जरूर कायम करेगी।"[6]

प्रश्नावली के दसवें खुले प्रश्न व साक्षात्कार की विवेचना-

वर्तमान पूंजीवादी और सत्तापक्षी मीडिया का विकल्प, जो जनमुखी हो,जनतांत्रिक हो। डॉ. खगेंद्र ठाकुर का कहना है कि नागरिक पत्रकारिता क्या होती है, मैं नहीं जानता। जन-पक्ष के लिए ही वैकल्पिक मीडिया की जरूरत है। यह तो संभव नहीं है। अब तो समाचार भी पैसे लेकर छापे जाते हैं, मीडिया के सभी रूप और प्रकार आवश्यक हैं। मैं जिस अर्थ में इसे

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

देखता हूँ, उस अर्थ में यह मीडिया कहाँ बढ़ रही हैं। मुख्यधारा की मीडिया शोषक-शासक वर्ग की मीडिया है इसकी कोशिश होती है कि जनता को सही खबर न मिले और जनता सत्ता रूप में न आए पूंजीवाद के आर्थिक, राजनीतिक प्रभुत्त्व के न्यूज क्राइसेस उसमें नहीं है, वह कुछ भी कारण बता कर पन्ना भरता है। वैकल्पिक मीडिया अभी कमजोर है। अतः इसकी भूमिका अभी कमजोर है। वैकल्पिक पूंजीकारी घरानों और सरकारी वर्चस्व से मुक्त होना चाहिए।

डॉ. खगेन्द्र ठाकुर (वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार)- व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई वही लड़ सकता है,जो पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली को बदलना चाहता है, जो केवल सरकार नहीं बल्कि राजसत्ता को बदलना चाहता है। राजसत्ता वह चीज है जो सरकार का नियंत्रण और संचालन करती है। इस सत्ता को तोड़े बिना व्यवस्था परिवर्तन संभव नहीं है। अभी तक जो परिवर्तन हुए हैं, वे यही रहे हैं कि एक पूंजीवादी गिरोह को हटाकर दूसरा गिरोह गद्दी पर आया, इसीलिए नीतिगत बदलाव नहीं हुआ है। आदिवासी महिलाओं की समस्याओं को लेकर कार्य करने वाली स्वतंत्र पत्रकार डॉ. बृजबाला का कहना है कि वैकल्पिक बहुत कारगर नहीं है।

मनोज मोहन (स्वतंत्र पत्रकार)- वैकल्पिक मीडिया में आ रहे लोगों को आत्मनियंत्रण के साथ इसका उपयोग करना जरूरी है। अपनी भड़ास निकालने के लिए उपयोग करेंगे तो आजकल की मुख्यधारा की पत्रकारिता की तरह धार खो देंगे।

डॉ. शिवकृपा मिश्रा (असिस्टेंट प्रोफेसर)-वैकल्पिक मीडिया तभी पूर्णतः सफल होगी जब समाज का हर व्यक्ति अथवा बहुतायत व्यक्ति इन्टरनेट का यूजर हो जाए और सोशल नेटवर्किंग से जुड़कर सामाजिक व राजनीतिक विषयों पर खुलकर चर्चा हो।

निष्कर्ष-

वैकल्पिक मीडिया हमारे विकास के साथ बढ़ा है। स्वतंत्रता के समय लोग पर्चे छापकर अपने विरोध को दर्ज करते थे। अपनी बात लोगों तक पहुँचाते थे। तब भी अखबार थे, उसमें ब्रिटिश सरकार के खिलाफ नहीं लिखा जा सकता था। आज भी कुछ वैसी ही स्थिति है। मुख्यधारा की मीडिया से कट जाने वाली खबरें वैकल्पिक मीडिया के द्वारा अपनी अलग पहचान बना रही हैं। मुख्यधारा के टीवी चैनल और अखबार जैसे संचार माध्यमों की जगह अब सच्चे जन पक्ष का निर्माण करने में लघु पत्रिकाओं और सामुदायिक रेडियो बड़ी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। किसी विशेष व्यवस्था परिवर्तन के उद्देश्य को लेकर अनेक पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशित की जा रही है, जो एक बेहतर जनपक्ष के वैकल्पिक मीडिया के रूप में उभर रही हैं। लेकिन इसके बावजूद अभी भी वैकल्पिक मीडिया को उस गतिशीलता का इंतजार रहता है जिस गतियुक्त और जनमानस से जुड़ी खबरों का इसमें समावेश रहता है।

इस अध्ययन में यह परिणाम मिलता है कि महिलाएं अपने अस्तित्व की लड़ाई लंबे समय से लड़ती आ रही हैं, लेकिन इसने अभियान का रूप नहीं लिया था। महिलाओं के पक्ष में जमीन तैयार करने में सामुदायिक रेडियो, लघु पत्र-पत्रिकाओं की सबसे अधिक भूमिका रही है क्योंकि ये सभी माध्यम आम आदमी तक पहुंचने के सर्वसुलभ व सस्ते माध्यम हैं।

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

73वें और 74वें संविधान संशोधन के परिणामस्वरूप देश की ग्रामीण एवं नगरीय स्वशासी संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था ने उन्हें अधिकार-संपन्न तो बनाया किंतु जब हरियाणा, हिमाचल प्रदेश,उत्तराखंड, बिहार और मध्यप्रदेश के कुछ आदिवासी क्षेत्रों में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों ने सामाजिक बुराइयों एवं अन्याय के विरूद्ध आवाज बुलंद कर उन पर विजय पाई तो वैकल्पिक मीडिया ने ही समाज में यह आस जगा दी कि सभी विसंगतियों के खिलाफ स्त्रियों की एकजुटता सचमुच क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है। महिलाओं को सामाजिक और राजनैतिक पिछड़ेपन के कारण मुख्यधारा की मीडिया जरूरत से ज्यादा विनम्र व कामुकता के व्यक्तित्त्व रूप में प्रतिबिंबित करना रहा है।

सुझाव-

वैकल्पिक मीडिया में आ रहे लोगों को आत्मनियंत्रण के साथ इसका उपयोग करना जरूरी है। अपनी भड़ास निकालने के लिए उपयोग करेंगे तो आजकल की मुख्यधारा की मीडिया की तरह धार खो देंगे। वैकल्पिक मीडिया व्यापक आबादी के जीवन से जुड़े मुद्दों पर एवं प्रगतिशील जीवन के मूल्यों के बारे में एक आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करती है, केवल सूचनाएँ नहीं वरन परिस्थितियों के कारण एवं परिणाम की भी व्याख्या प्रस्तुत करती है। वर्तमान व्यवस्था की वैज्ञानिक आलोचना प्रस्तुत कर वैकल्पिक व्यवस्था की वैज्ञानिक समझ प्रस्तुत करती है। यह केवल अराजक प्रतिरोध नहीं वरन एक सुसंगत व्यवस्था भी प्रस्तुत करती है। वर्तमान में अधिकारों के लिए सारांश का आह्वान करती और समग्रता में आमजन की आवाज को मुखरता देना नितांत आवश्यक हो जाता है। वैकल्पिक मीडिया की स्थिति अभी सशक्त नहीं बन पायी है। अतः इसकी भूमिका भी कमजोर है। वैकल्पिक मीडिया पूंजीकारी घरानों और सरकारी वर्चस्व से मुक्त होनी चाहिए।

शोध सीमाएं- इस अध्ययन को Pilot शोध के रूप में संरचित कर महिलाओं की सामाजिक व वैचारिक सशक्तीकरण में वैकल्पिक मीडिया के विभिन्न कारकों का विश्लेषण किया गया है। बांदा में बुन्देली व हिन्दी खड़ी बोली बोलने वाली दोनों तरह की महिलाएं रहती हैं। इनमें से 100 ग्रामीण व शहरी महिलाओं को स्तरीकृत निदर्शन के द्वारा चयनित किया किया गया है। स्थानीय अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ, व कुछ ब्लॉग्स व पोर्टल्स को शामिल किया गया है जो महिलाओं पर केन्द्रित पठन सामग्री प्रदान करते हैं। अध्ययन से महिलाओं के सशक्तीकरण में वैकल्पिक मीडिया और किस प्रकार अपना योगदान कर रहा है।

वास्तविकता (Originality/value)- उत्तर प्रदेश में जातिगत व लिंगभेद की समस्याएँ बहुतायत हैं। इसके बावजूद उनकी पारिवारिक, सामाजिक और वैचारिक स्थिति में परिवर्तन स्पष्ट दिखाई दे रहा है। महिला के प्रति हिंसा, यौन उत्पीड़न, दहेज प्रताड़ना जैसी घटनाएं पहले से घटती आ रही हैं। इसके पीछे का कारण महिलाओं द्वारा समस्याओं के विरोध में अपनी अपनी आवाज को संचार के विभिन्न वैकल्पिक माध्यमों द्वारा बुलंद करना है। वैकल्पिक मीडिया ने उनमें वह चेतना जगायी है जिसके कारण अब वे अत्याचार के विरुद्ध मुखर हो रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

The Asian Thinker

1. Bailey, O.G., Cammaerts, B., & Carpentier, N. (2007). *Understanding Alternative Media*. England: open university press Mc Graw Hill, 15.
2. Dr. Pandey, G.J. (July-Sept, 2011). Alternative Media and Environment. Communication Today, 13(3), 61-62.
3. Bailey, O.G., Cammaerts, B., & Carpentier, N. (2007). *Understanding Alternative Media*. England : open university press Mc Graw Hill, 3.
4. Atton, C. (2006). *Alternative Media*. New Delhi : B-42 Panchsheel Enclve PO Box 4109, 10.
5. Bailey, O.G., Cammaerts, B., & Carpentier, N. (2007). *Understanding Alternative Media*. England: open university press Mc Graw Hill, 11-12.
6. वाचस्पति, अ., (2012). *वैकल्पिक मीडिया विषय पर साक्षात्कार*. शोधार्थी द्वारा 'हिंदी का दूसरा समय' सेमिनार में.

The Asian Thinker